Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 1

– Save This Page as a PDF–

आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती १५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१

खोदाई: यहूदी परंपरा के अनुसार, प्रेरितों ने क्या गलत किया? यीशु को फरीसियों और उनकी परंपराओं के बारे में कौन से तीन क्षेत्र इतने पाखंडी लगे? यशायाह का उद्धरण मौजूदा मुद्दे को कैसे संबोधित करता है? सच्ची अस्वच्छता का स्रोत क्या है? बाहरी चीज़ें किसी व्यक्ति को अशुद्ध क्यों नहीं कर सकतीं? येशुआ के दृष्टान्त का क्या अर्थ है? शिष्यों ने इसे क्यों नहीं समझा? यहोवा के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित करने के बजाय धार्मिक नियमों का पालन करना क्यों आसान था?

विचार करें: आपकी पारिवारिक परंपराओं में से कौन सी परंपरा को बदलना मुश्किल होगा? आप किन परंपराओं का पालन करते हैं जो आपकी धार्मिक विरासत का हिस्सा हैं? आप पवित्र दिखने के लिए क्या करते हैं? आप अपने हृदय में ईश्वर का सम्मान करने के बजाय बाहरी धार्मिक परंपरा को कायम रखने की सबसे अधिक संभावना कब रखते हैं? बाहरी क्रियाओं द्वारा आध्यात्मिकता को मापने में क्या गलत है? आप यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि परंपराएँ और बाहरी गतिविधियाँ सच्ची पवित्रता का स्थान न ले लें? शुद्ध हृदय पाने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

यीशु की लोकप्रियता ने उसके समय के धार्मिक नेताओं के बीच ईर्ष्या और चिंता पैदा कर दी। उपद्रवी रब्बी बहुत सारे नियम तोड़ रहा था। उनके अनुयायी सदियों से चली आ रही परंपराओं की अनदेखी कर रहे थे। जीवन जीने के लिए नियमों का एक विशाल संग्रह धीरे-धीरे विकसित हुआ था जो कि यहोवा के वचन की केंद्रीय शिक्षा को प्रतिबिंबित करता था। हालाँकि, इनमें से कई, उनकी आज्ञाओं को टालने और वास्तव में उनका खंडन करने के सूक्ष्म तरीके साबित हुए, जैसा कि मसीह यहाँ चित्रित करते हैं।

हमारे उद्धारकर्ता के समय तक, बुजुर्गों की परंपरा या मौखिक ब्यबस्था (ईआई – मौखिक ब्यबस्था देखें), यहूदियों की नजर में पवित्रशास्त्र के बराबर हो गया था। वास्तव में, कुछ यहूदियों के लिए यह तानाख से भी बड़ा हो गया था। रब्बियों ने सिखाया कि धर्मग्रंथों के शब्दों की तुलना में शास्त्रियों के शब्दों के विरुद्ध कार्य करना अधिक दंडनीय है। उनके पास कई अन्य कहावतें थीं जो वास्तव में वही बात कहती थीं। रब्बियों की एक कहावत थी, “जो कोई ऐसी बात कहता है जो उसने अपने रब्बी से नहीं सुनी है, वह शेचिना की महिमा को इस्राएल से दूर कर देता है।” उन्होंने यह भी कहा, “वह जो अपने रब्बियों का खंडन करता है, वही शेचिना की महिमा का खंडन करेगा। वह जो अपने रब्बी के विरुद्ध बोलेगा, वही ईश्वर के विरुद्ध

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 2

बोलेगा।” चौंककर, रब्बियों ने कहा, “मेरे बेटे, मेरे लोगों को रब्बियों के शब्द दो, फिर उन्हें टोरा के शब्द दो।” उसी विचारधारा में, रब्बियों ने सिखाया कि धर्मग्रंथों का अध्ययन करना न तो अच्छा है और न ही बुरा। लेकिन मौखिक ब्यबस्था का अध्ययन करना एक अच्छी आदत थी जो इनाम लाती थी।

हमने पहले ही मौखिक ब्यबस्था के संबंध में यीशु और यहूदी नेतृत्व के बीच टकराव के दो प्रमुख क्षेत्रों को देखा है: उपवास (देखें Dq – जब आप उपवास करते हैं, तो अपने सिर पर तेल लगाएं और अपना चेहरा धोएं) और सब्बाथ रखने के उचित तरीके (देखें Cs– यीशु ने बेथेस्डा के तालाब में एक आदमी को ठीक किया), (Cv – मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का परमेश्वर है), और (Cw – यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला एक आदमी को ठीक किया)। यहां हम हाथ धोने को लेकर तीसरा बड़ा टकराव देखते हैं।

इसके बाद यीशु गलील में घूमता रहा। वह यहूदिया में घूमना नहीं चाहता था क्योंकि वहां के यहूदी नेता उसे मारने का रास्ता ढूंढ रहे थे (यूहन्ना ७:१)। अब से लेकर उनके सार्वजनिक मंत्रालय के अंत तक, मसीह के प्रति शत्रुता बढ़ती रही। जैसे-जैसे उनके विरोधियों की नफरत गहरी होती गई, इसका मतलब यह हुआ कि येशुआ अब खुले तौर पर आगे नहीं बढ़ सकते थे।

और कुछ फरीसी और कुछ टोरा-शिक्षक जो यरूशलेम से आये थे, यीशु के पास इकट्ठे हो गये (मत्ती १५:१; मरकुस ७:१)। मरकुस ने इस टकराव का विवरण और, या ग्रीक कार्य काई शब्द से शुरू किया है। यह जो कुछ चल रहा है उसे पहले जो चल रहा था उससे बहुत शिथिलता से जोड़ता है; अर्थात्, लोगों की अभूतपूर्व लोकप्रियता और फरीसी यहूदी धर्म की असाधारण शत्रुता के बीच विरोधाभास।

उन्होंने उसके कुछ चेलों को अपवित्र अर्थात्
बिना धोए हाथों से रोटी खाते देखा (मरकुस ७:२)। ग्रीक में ब्रेड बहुवचन है और इसके पहले निश्चित लेख आते हैं। लेख फरीसियों और प्रभु द्वारा ज्ञात कुछ विशेष रोटी की ओर इशारा करता है। बहुवचन संख्या रोटियों की बात करती है। जाहिर तौर पर संदर्भ बेथसैदा शहर के पास पहाड़ी से टोकरियों में संरक्षित कुछ रोटी खाने वाले शिष्यों का था (देखें Fn – यीशु ने ५,००० को खिलाया)। उस समय हाथ धोने का कोई विशेष अवसर नहीं था, जो करना एक अच्छी बात होती। लेकिन फरीसियों के साथ यह कहीं अधिक गंभीर मुद्दा था क्योंकि वे केवल अपनी परंपराओं के संदर्भ में सोच रहे थे।

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 3

फरीसी और सभी यहूदी तब तक भोजन नहीं करते जब तक कि वे बड़ों की परंपरा (मरकुस ७:३), या मौखिक ब्यबस्था का पालन करते हुए अपने हाथ औपचारिक रूप से नहीं धो लेते। बुजुर्ग शब्द परिषद के सदस्यों को संदर्भित करता है (Lg – महान महासभा देखें)। आरंभिक समय में जनता के शासक वृद्ध व्यक्तियों में से चुने जाते थे। मुट्ठी भींचकर धुलाई की गई। उस व्यक्ति ने दूसरे हाथ को भींचकर एक हाथ को कोहनी तक बांह पर रगड़ा। “हाथ” को अंगुलियों के सिरे से लेकर कोहनी तक माना जाता था। फिर वह व्यक्ति दूसरे हाथ की हथेली का उपयोग करके दूसरे हाथ की हथेली को रगड़ेगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि भोजन को छूने वाला हिस्सा साफ है।

जब वे बाज़ार से आते हैं तो बिना नहाए कुछ नहीं खाते। औपचारिक रूप से अशुद्ध चीज़ों को छूना स्वीकार्य था, लेकिन मौखिक ब्यबस्था में कहा गया था कि खाने से पहले उन्हें कोहनी से उंगलियों तक अपने “हाथ” धोने होंगे। और वे कई अन्य परंपराओं का पालन करते हैं, जैसे कप, घड़े और केतली धोना (मरकुस ७:४)। यहूदी कुछ भी खाने से पहले अपने हाथ धोने में सावधानी बरतते थे। जब तक वे पहले अपने हाथ नहीं धो लेते तब तक वे सबसे छोटा बीज भी नहीं खाते थे, हालाँकि मूसा ने कभी इसकी आज्ञा नहीं दी थी।

रूढ़िवादी यहूदी आज भोजन से पहले हाथ धोने का पालन करते हैं। इसके तर्क का स्वच्छता से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि यह इस विचार पर आधारित है कि “एक आदमी का घर उसका मंदिर है”, खाने की मेज उसकी वेदी है, भोजन उसका बलिदान है और वह खुद पुजारी है। चूंकि तानाख के लिए कांस्य वेदी पर बलि चढ़ाने से पहले पुजारियों को औपचारिक रूप से साफ होने की आवश्यकता होती है, इसलिए मौखिक ब्यबस्था में भोजन खाने से पहले भी इसकी आवश्यकता होती है।

आपको यह अंदाज़ा देने के लिए कि वे इस बारे में कितने मौलिक थे, यहाँ बताया गया है कि मौखिक ब्यबस्था हाथ धोने के बारे में क्या कहता है। रब्बियों ने सिखाया कि हाथ धोने की उपेक्षा करने का दोषी होने से बेहतर है कि पानी के लिए चार मील पैदल चलना पड़े। उन्होंने यह भी कहा कि जो व्यक्ति हाथ धोने में लापरवाही करता है वह हत्यारे के समान ही बुरा होता है। इसी सोच के साथ, उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति हाथ धोने की उपेक्षा करता है वह उस व्यक्ति के समान है जो वेश्या के पास जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि तीन पाप अपने पीछे गरीबी लाते हैं, और उनमें से एक हाथ धोने की उपेक्षा करना है (दूसरे शब्दों में, यदि आप गरीब नहीं मरना चाहते हैं, तो खाने से पहले अपने हाथ धो लें)।

लेकिन जब यीशु ने मनुष्यों की परंपराओं का पालन नहीं किया तो उन पर क्रूर हमला किया गया। इसलिए फरीसियों और तोरा-शिक्षकों ने यीशु से पूछा, “तेरा शिष्य खाने से पहले हाथ धोने के बजाय बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ता है” (मत्ती १५:२; मरकुस ७:५)? यह ध्यान देने योग्य है कि फरीसियों और टोरा-शिक्षकों के पास यीशु पर टोरा का उल्लंघन करने का आरोप लगाने का एक भी अवसर नहीं था, क्योंकि उन्होंने इसे

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 4

पूरी तरह से रखा था (निर्गमन Du – मसीहा और टोरा पर मेरी टिप्पणी देखें)। उनका हर तर्क, बिना किसी अपवाद के, मौखिक ब्यबस्था पर था। यही उनकी अस्वीकृति का आधार था। फिर यीशु तीन क्षेत्रों की ओर इशारा करते हैं जहां फरीसी यहूदी धर्म एक दिखावा था।

सबसे पहले, उन्होंने कहा कि मनुष्यों की परंपराओं की वास्तविक प्रकृति पाखंड है। उस ने उत्तर दिया, यशायाह ने तुम कपटियोंके विषय में भविष्यद्वाणी करके ठीक कहा; जैसा लिखा है: “ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनका मन मुझ से दूर रहता है। वे व्यर्थ ही मेरी आराधना करते हैं; उनकी शिक्षाएँ केवल मानवीय नियम हैं (मरकुस ७:६-७; यशायाह २९:१३)। विधिवाद आध्यात्मिकता या धार्मिक होने का बाहरी एहसास देता है। वे आध्यात्मिक या धार्मिक प्रतीत होते हैं क्योंकि वे कानूनी जीवनशैली जीते हैं। उनका मानना है कि मानवीय नियमों के इस सेट को बनाए रखने की कोशिश करके वे परमेश्वर का सम्मान और पूजा कर रहे हैं।

दूसरे, कभी-कभी मनुष्यों की परंपराओं को बनाए रखने के लिए, उन्हें वास्तव में एक दैवीय आदेश की उपेक्षा करनी पड़ती थी। तुमने परमेश्वर की आज्ञाओं को [त्याग दिया] और मनुष्यों की परंपराओं को पकड़े हुए हो (मरकुस ७:८)। यीशु मौखिक ब्यबस्था को तोड़ने की बात स्वीकार करते हैं, और, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, वह इसे तोड़ने के लिए अपने रास्ते से हट जाते हैं।

तीसरा, कभी-कभी मनुष्यों की परंपराओं को बनाए रखने के लिए, उन्हें दैवीय आज्ञा को अस्वीकार करना पड़ता था। तब वह तुरंत उनके पाखंड का उदाहरण देते हैं। येशुआ की प्रतिक्रिया सरल और सशक्त दोनों थी क्योंकि उन्होंने उनके प्रश्न का उत्तर व्यंग्य और कटु व्यंग्य के साथ दिया जब उन्होंने पूछा: आप अपनी परंपरा से परमेश्वर की आज्ञा को क्यों तोड़ते हैं (मती १५:३; मरकुस ७:९ सीजेबी)? उन्होंने परमेश्वर के वचन को निरर्थक बना दिया, और बहुतों को अनकही ठोकर खिलाई। क्योंकि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा कहा, “अपने पिता और माता का आदर करना,” और उस मिट्ज्वा के साथ, टोरा में यह भी कहा गया है कि जो कोई अपने पिता या माता को शाप देता है, उसे मृत्युदंड दिया जाना चाहिए (मती १५:४; मरकुस ७:१०) . उस समय, यह अभी भी टोरा को तोड़ने की आज्ञा थी। लेकिन मिश्ना ने घोषणा की, “जो अपने पिता या माता को श्राप देता है वह दोषी नहीं है जब तक कि वह विशेष रूप से उन्हें यहोवा के नाम से श्राप नहीं देता” (सैन्हेड्रिन ७. ८)। हालाँकि ये स्पष्ट टोरा आदेश हैं जिनका कोई भी रब्बी निश्चित रूप से सम्मान करेगा, मसीहा बताते हैं कि कैसे, एक धार्मिक बहस के माध्यम से, मौखिक ब्यबस्था ने आदेश के मूल इरादे को दरकिनार कर दिया।

लेकिन आप कहते हैं कि यदि कोई यह घोषणा करता है कि जो कुछ उसके पिता या माता की मदद के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था वह “परमेश्वर को समर्पित” या कोरबन है (मती १५:५; मरकुस ७:११)। येशुआ मौखिक ब्यबस्था का जिक्र कर रहे थे जब उन्होंने वाक्यांश के साथ जवाब दिया लेकिन आप कहते हैं, परिचित शब्दों के बजाय यह लिखा गया

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 5

है। किसी भी समय एक फरीसी अपने सिर के ऊपर अपना हाथ लहराता था और जादुई शब्द कहता था: कॉर्बन, जिसका अर्थ था मंदिर के खजाने को समर्पित करना, फिर उस समय उसके पास जो कुछ भी था वह परमेश्वर के लिए समर्पित हो गया, या अलग रख दिया गया। इसका मतलब था कि वह अपने कॉर्बन के साथ दो चीजों में से एक कर सकता था। वह इसका सारा भाग, या इसका कुछ भाग, मंदिर के खजाने को दे सकता था, या वह इसे अपने निजी उपयोग के लिए रख सकता था। वह इसके साथ जो नहीं कर सका वह यह था कि इसे किसी और को उपयोग करने के लिए दे दिया जाए।

मोशे ने कहा: अपने पिता और माता का सम्मान करें (निर्गमन Do – अपने पिता और अपनी माता का सम्मान करें पर मेरी टिप्पणी देखें)। उस आज्ञा का निहितार्थ यह था कि बच्चे अपने बड़े माता-पिता के कल्याण के लिए जिम्मेदार थे जब वे स्वयं की देखभाल करने में असमर्थ हो जाते थे। यहूदियों का मानना था कि जब मूसा ने यह आदेश दिया था तो उसका यही मतलब था। लेकिन फरीसी अपनी संपत्ति को किसी ऐसे व्यक्ति के साथ साझा करने में बेहद अनिच्छुक थे जो फरीसी नहीं था। समस्या यह थी कि उनके माता-पिता फरीसी नहीं थे। मुद्दे को टालने के लिए, यदि कोई फरीसी अपने पिता को पास आते देखता, यह जानते हुए कि वह कुछ मांग सकता है, तो वह केवल अपने सिर के ऊपर अपना हाथ लहराता और कहता: कॉर्बन। जब उसके पिता अपनी ज़रूरत बताते थे, तो बेटा कहता था, “गॉली जी डैड, काश आपने मुझसे पहले ही पूछ लिया होता। मैंने अभी-अभी अपनी सारी संपत्ति कॉर्बन घोषित की है।” इसीलिए यीशु ने कहा: तब तू उन्हें अपने पिता या माता के लिये कुछ भी करने न देना। इस प्रकार तुम परमेश्वर के वचन को अपनी परंपरा के द्वारा जो तुमने दिया है, रद्द कर देते हो। और आप ऐसे बहुत से काम करते हैं. तुम पाखंडी! यशायाह सही था जब उसने आपके बारे में भविष्यवाणी की थी (मत्तीयाहु १५:६-७; मरकुस ७:१२-१३)। तब येशुआ ने बताया कि यह कोई नई बात नहीं है। उन्होंने तानाख़ से एक आयत उद्धृत की जिसमें यशायाह ने अपनी पीढ़ी के कुछ लोगों को भी डांटा था। ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनका मन मुझ से दूर रहता है। वे व्यर्थ ही मेरी आराधना करते हैं; उनकी शिक्षाएँ केवल मानवीय नियम हैं (मती १५:८-९).

यहाँ उनके पाखंड का एक और उदाहरण है। तोराह ने कहा: सब्त के दिन को पवित्र रखकर याद रखो। उस दिन तुम कोई काम न करना। (निर्गमन २०:८-११) लेकिन बहुत से फरीसी मंदिर में रहना चाहते थे, या विभिन्न शहरों में व्यापार करना चाहते थे। तो इससे बचने के लिए, सोफिम के स्कूल ने कहा, “ठीक है, हम जहां रहते हैं वहां से एक सब्त के दिन से अधिक की यात्रा नहीं कर सकते। तो हम कैसे परिभाषित करें कि हमारा घर कहाँ है?” उन्होंने परिभाषित किया कि “घर” वह है जहां आपकी संपत्ति होती है। इससे समस्या हल हो गई! वे एक-एक मील की दूरी पर खड़े गुलामों को भेजते थे, जिनमें से प्रत्येक के पास उसकी एक-एक संपत्ति होती थी। परिणामस्वरूप, प्रत्येक मील उसका “घर” था। उन्होंने ऐसे बहुत से काम किये।

हमें यहां याद दिलाया जाता है कि येशुआ इसराइल के लिए मेशियाक के रूप में आया था

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 6

और, इस तरह, अपनी पीढ़ी की त्रुटियों को सुधारने के लिए एक भविष्यसूचक आवाज थी। तो उस अर्थ में, मसीह ने अपनी पीढ़ी (और वास्तव में हर पीढ़ी) को टोरा की शुद्ध समझ के लिए बुलाया, भले ही इसका मतलब समय के साथ जमा हुई मनुष्यों की कुछ परंपराओं को छोड़ना हो। तल्मूडिक परंपरा आज यहूदी और गैर-यहूदी दोनों विश्वासियों के लिए बहुत मूल्यवान और रुचिकर है, विशेष रूप से पहली शताब्दी में लिखे गए सुसमाचारों को समझने के संदर्भ में। इसके बावजूद, ऐसे समय होते हैं जब बड़ों की परंपरा को ईश्वर के लिखित वचन के अधीन होना चाहिए, जैसा कि यीशु मसीह ने यहां सिखाया था।

हम जानते हैं कि बाहरी व्यवहार और माप दोनों ही अत्यधिक ग़लत हैं। जितनी बार वे सच्चाई बयां करते हैं उतनी बार धोखा देने वाले भी लगते हैं। लेकिन इसी तरह से हम अन्य लोगों का मूल्यांकन करते हैं जब तक कि हमें यह नहीं पता चलता कि हाशेम दिखावे से न तो प्रभावित है और न ही मूर्ख है। लेकिन ईश्वर हृदय को देखता है, और वह हृदयों को साफ करने में विशेषज्ञ है। यहोवा की दृष्टि में शुद्ध होने का मतलब यह नहीं है कि हम परिपूर्ण हैं; लेकिन इसका मतलब यह है कि हम यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाते हैं कि हमारे जीवन के आंतरिक और बाहरी पहलू सुसंगत हैं। दाउद राजा कहेंगे: हे परमेश्वर, मेरे अंदर एक शुद्ध हृदय पैदा करो, और मेरे भीतर एक दृढ़ आत्मा को नवीनीकृत करो। मुझे अपनी उपस्थिति से मत हटाओ या अपनी पवित्र आत्मा मुझसे मत लो। अपने उद्धार का आनन्द मुझे लौटा दो और मुझे सम्भालने के लिये एक इच्छुक आत्मा प्रदान करो (भजन ५१:१०-१२; दूसरा कुरिन्थियों ४:१६-१८; इब्रानियों १२:१४ भी देखें)।

इस मोड़ पर, येशुआ ने चर्चा को फरीसियों से हटाकर अपने आसपास की भीड़ की ओर मोड़ दिया। फिर से यीशु ने एक दृष्टांत के माध्यम से जनता को सिखाया ताकि केवल विश्वास करने वाले ही उसे समझ सकें। पहले तो उनके शिष्य भी नहीं समझ पाए (देखें Ez – एक सदन में राज्य के निजी दृष्टान्त)। उसने भीड़ को अपने पास बुलाया और कहा: हे सब लोग मेरी बात सुनो, और इसे समझो। जो किसी के मुँह में जाता है (जैसे भोजन) वह उन्हें अशुद्ध नहीं करता है, बल्कि जो उनके मुँह से निकलता है (मौखिक ब्यबस्था की तरह), वही उन्हें अशुद्ध करता है (मती १५:१०-११; मरकुस ७:१४-१५)।

तब प्रेरित उसके पास आए और पूछा: क्या आप जानते हैं कि फरीसियों ने यह सुनकर नाराज हो गए थे (मती १५:१२)? टोरा-शिक्षकों के नाराज होने के जवाब में, यीशु पीछे नहीं हटे बल्कि दो बातें कहकर अपनी फटकार जारी रखी। सबसे पहले, वे परमेश्वर द्वारा नहीं लगाए गए पौधे हैं। अत: उन्हें उखाड़ फेंकना होगा। उसने उत्तर दिया: हर वह पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ दिया जाएगा (मती १५:१३)। चूँकि वे पाखंडी नेता वास्तव में यहोवा के नहीं थे, परमेश्वर स्वयं अंततः उनसे निपटेंगे।

दूसरे, वे अंधों का नेतृत्व करने वाले अंधे मार्गदर्शक थे। उन्हें छोड़ दो; वे अंधे मार्गदर्शक हैं। यदि अन्धा अन्धे को अगुवाई दे, तो दोनों गड़हे में

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 7

गिरेंगे (मत्ती १५:१४)। सादृश्य अद्भुत था – जब मसीहा की बात आई तो समुदाय के श्रद्धेय मार्गदर्शक वास्तव में स्वयं अंधे थे। विनाश का वह गड्ढा ७० ए.डी में आएगा। यरूशलेम के विनाश के साथ।

जब वह भीड़ को छोड़कर पतरस के घर में दाखिल हुआ, तो बारहों ने बात की और पूछा: हमें यह दृष्टान्त समझाओ (मती १५:१५; मरकुस ७:१७)। इसलिए क्योंकि वह उनके साथ अकेले थे, उन्होंने इसका अर्थ समझाया। जनता के लिए उद्देश्य सत्य को छिपाना था, उनके प्रेरितों के लिए उद्देश्य सत्य को चित्रित करना था (देखें ईएन – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। वास्तविक मुद्दा अपवित्रता था। यीशु अपने शिष्यों को यह सिखाने का प्रयास कर रहे थे कि अशुद्धता आंतरिक है। फरीसियों ने सिखाया कि अशुद्धता केवल बाहरी थी। उनका मानना था कि लोग तब तक अशुद्ध नहीं होते जब तक वे बाहरी तौर पर कुछ नहीं करते। लेकिन यीशु ने सिखाया कि आंतरिक निर्णय ही अशुद्धता का बिंदु है। यीशु के भाई याकूब इसे इस प्रकार कहेंगे: जब परीक्षा हो, तो किसी को यह नहीं कहना चाहिए, “परमेश्वर मुझे लुभा रहे हैं।” क्योंकि न तो बुराई से परमेश्वर की परीक्षा होती है, और न वह किसी की परीक्षा करता है; परन्तु हर कोई परीक्षा में पड़ता है, जब वह अपनी ही बुरी आंतरिक अभिलाषा से खिंचकर बहक जाता है। फिर इच्छा गर्भवती होकर पाप को जन्म देती है; और पाप जब बढ़ जाता है, तो मृत्यु को जन्म देता है (याकूब १:१३-१५)।

येशुआ का स्पष्टीकरण एक सौम्य फटकार के साथ आया: क्या तुम इतने सुस्त हो? यीशु ने उनसे पूछा. क्या तुम नहीं देखते कि जो कुछ मुँह में जाता है वह पेट में जाता है और फिर शरीर से बाहर निकल जाता है? उन्होंने अपनी शिक्षा का सारांश यह कहकर दिया कि जो बातें किसी व्यक्ति के मुँह से निकलती हैं वे हृदय से आती हैं, और ये उन्हें अशुद्ध करती हैं। यह कहते हुए, प्रभु ने सभी खाद्य पदार्थों (सभी चीजों को नहीं) को शुद्ध घोषित किया (मत्ती १५:१६-१८; मरकुस ७:१८-२०)। तकनीकी शब्द खाद्य पदार्थों का उपयोग करके पहली सदी के किसी भी यहूदी पाठक ने यह समझ लिया होगा कि यह टोरा की खाद्य सूची को संदर्भित करता है जैसा कि लैव्यव्यवस्था ११:१-४७ में पाया गया है। इन कोषेर खाद्य पदार्थों को केवल इसलिए अपवित्र नहीं किया गया क्योंकि मौखिक ब्यबस्था का पालन नहीं किया जाना था।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि येशुआ टोरा में आहार संबंधी आज्ञाओं को समाप्त नहीं कर रहा था। यह उनके स्वयं के शब्दों के अनुरूप नहीं होगा: मैं आपको बताता हूं कि जब तक स्वर्ग और पृथ्वी टल नहीं जाते, तब तक टोरा से एक युद या एक स्ट्रोक भी नहीं गुजरेगा – तब तक नहीं जब तक कि जो कुछ होना चाहिए वह घटित न हो जाए (मती ५:१८; लूका १६:१७ जेसीबी).

पतरस प्रेरितों के काम १०:९-१५ में प्रश्न उठाएगा और यीशु को उसे यह पाठ फिर से सिखाना होगा। मसीह के मसीहाई मिशन का एक हिस्सा भोजन के क्षेत्र में स्वच्छ और अशुद्ध के बीच अंतर करना था। मसीहा की मृत्यु पर, सभी मांस साफ़ हो गए।

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 8

हालाँकि कुछ शारीरिक अशुद्धियाँ जैविक प्रणाली से होकर गुज़र सकती हैं, लेकिन अधिक गंभीर चीज़ें भी हैं जो किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से अशुद्ध कर देती हैं। क्योंकि हृदय से ही बुरे विचार निकलते हैं – हत्या, व्यभिचार, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही, निन्दा, लोभ, द्वेष, छल, अपवित्रता, ईर्ष्या, निन्दा, अहंकार और मूर्खता। ये ही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करते हैं; परन्तु बिना हाथ धोए भोजन करने से वे अशुद्ध नहीं होते (मत्ती १५:१९-२०; मरकुस ७:२१-२३)। ईसा मसीह की शिक्षा केवल शब्दों और कार्यों के माध्यम से एक कोषेर हृदय रखने की प्राथमिकता पर जोर दे रही थी।

यहूदा इस्करियोती यीशु की बातें सुन रहा था। वह एकमात्र प्रेरित था जिसका पालन-पोषण गलील में नहीं हुआ, जिससे वह समूह में एक प्रमुख बाहरी व्यक्ति बन गया। उसने एक ही प्रकार के वस्त्र और सैंडल पहने, अपना सिर धूप से ढका हुआ था, और गलील के जंगली कुत्तों से बचने के लिए बाकी शिष्यों की तरह एक छड़ी लेकर चलता था। लेकिन उनका उच्चारण दक्षिण की ओर था, उत्तर की ओर नहीं। इसलिए हर बार जब वह बोलने के लिए अपना मुँह खोलता था, यहूदा बाकी प्रेरितों को याद दिलाता था कि वह अलग है।

अब बुरे विचारों के बारे में मसीहा के शब्द यहूदा को उससे और भी दूर धकेल देते हैं। क्योंकि यहूदा चोर था (यूहन्ना १२:६)। कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका का लाभ उठाते हुए, वह नियमित रूप से प्रेरित के अल्प वित्त से चोरी करता है। जब वह मेज पर लेटा हुआ था, तो मार्था और लाजर की बहन मरियम ने उसके सिर पर शुद्ध जटामाँ से बना लगभग एक पाइंट बहुत महंगा इत्र उँडेल दिया। यहूदा अकेला क्रोधित था, और इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि इसे बेचा जाए और लाभ समूह के सांप्रदायिक मनीबैग में रखा जाए – ताकि वह अपने स्वयं के उपयोग के लिए पैसे चुरा सके। अब यीशु उसे स्मरण दिला रहा था कि वह अशुद्ध हो गया है।

यहूदा ने गलील में नैतिक रूप से अपवित्र होने को केवल मन की आध्यात्मिक स्थिति नहीं माना; यह पूरी तरह से लोगों के एक अलग वर्ग में प्रवेश करना था। ऐसा व्यक्ति बहिष्कृत हो जाएगा, केवल टैनिंग या खनन जैसी कठिन नौकरियों के लिए उपयुक्त होगा, जिसके पास कोई जमीन नहीं होगी और वह जीवन भर गरीब रहेगा। यहूदा ने इन लोगों को उस भीड़ में देखा था जो यीशु को देखने के लिए सिर्फ इसलिए उमड़ी थी क्योंकि उनके पास जीवन में कोई मौका नहीं था और उसने उन्हें आशा प्रदान की थी। उनके पास कोई परिवार नहीं था, कोई खेत नहीं था और उनके सिर पर कोई छत नहीं थी। अन्य लोग अपराध के जीवन की ओर मुड़ गए, अपराधी और डाकू बन गए, एकजुट हो गए और गुफाओं में रहने लगे। उनका जीवन कठिन था और उनकी मृत्यु भी कठिन थी।

यह उस प्रकार का जीवन नहीं था जिसकी यहूदा ने अपने लिए योजना बनाई थी। यदि येशुआ मेशियाच था, जैसा कि यहूदा का मानना था, तो चमत्कार करने वाले रब्बी को एक दिन रोमन कब्जे को उखाड़ फेंकना और यहूदिया पर शासन करना तय था। बारह में से एक के रूप में जुडास की भूमिका उस दिन आने पर उसे नई सरकार में सबसे प्रतिष्ठित और

Fs – आपके शिष्य बड़ों की परंपरा को क्यों तोड़ते हैं? मत्ती
१५:१-२०; मरकुस ७:१-२३; यूहन्ना ७:१ | 9

शक्तिशाली भूमिका सुनिश्चित करेगी।

यहूदा स्पष्ट रूप से मसीहा की शिक्षाओं में विश्वास करता था, और निश्चित रूप से उसके प्रेरितों में से एक होने के कारण मिले ध्यान का आनंद लेता था। लेकिन भौतिक संपदा की उसकी इच्छा किसी भी आध्यात्मिक लाभ पर हावी हो जाएगी। विश्वासघाती अपनी जरूरतों को अपने रब्बी और अन्य साथियों की जरूरतों से ऊपर रखेगा। कीमत के बदले में, यहूदा कुछ भी करने में सक्षम था।

लेकिन बुजुर्गों की परंपरा पर वापस लौटते हुए, इसकी बुराई इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि यह परमेश्वर के पूर्णता के उच्च पवित्र मानक को लेती है, और इसे मानव आत्मनिर्भरता के नाले में खींच लेती है। टोरा के अनुसार पूर्णता से जीना एक असंभव कार्य था और है। यीशु मसीह एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने संपूर्ण टोरा को पूरा किया है, बिना किसी आज्ञा का उल्लंघन किए। रब्बी शाऊल हमें बताता है कि टोरा की आज्ञाएँ यहूदियों को उन्हें मसीह के पास लाने के लिए एक शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए भेजी गई थीं (गलातियों ४:१-७ केजेवी)। परमेश्वर की योजना यह थी कि जब यहूदियों को एहसास हुआ कि टोरा की ६१३ आज्ञाओं का पालन करना असंभव है, तो वे मसीहा की तलाश करेंगे। लेकिन मौखिक ब्यबस्था ने परमेश्वर की पूर्णता के उच्च पवित्र मानक को कुछ हद तक कम कर दिया जो यहूदी वास्तव में कर सकते थे। उदाहरण के लिए, यदि आप एक दर्जी थे और बुजुर्गों की परंपरा कहती थी कि आप सब्त के दिन अपनी सुई को पच्चीस कदम से अधिक नहीं ले जा सकते क्योंकि तब इसे काम माना जाएगा। तो कौन सा आसान है? पच्चीस कदम तक अपनी सुई नहीं ले जाना, या सब्त को याद रखना और उसका पालन करना और उसे पवित्र नहीं रखना? उत्तर स्पष्ट है. अधिकांश भाग के लिए, यहूदी वास्तव में वही कर सकते थे जो मौखिक ब्यबस्था की आवश्यकता थी। लेकिन वे कभी भी लगातार वह नहीं कर सके जिसकी टोरा को आवश्यकता थी। अंतिम परिणाम यह हुआ कि मनुष्यों की परंपराओं (मरकुस ७:८) ने मसीहा की आवश्यकता को समाप्त कर दिया और निश्चित रूप से, जब वह आया – तो वे उससे चूक गए। यह सब मौखिक ब्यबस्था के कारण है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मसीह ने इसका तिरस्कार किया और उसका इससे कोई लेना-देना नहीं होगा। परिणामस्वरूप, वहां के यहूदी नेता उसे मारने का रास्ता ढूंढ रहे थे (यूहन्ना ७:१)।

प्रिय पिता परमेश्वर, आपका बेटा हमेशा टोरा के अक्षर का पालन करने और टोरा की भावना के बीच की रेखा को जानता था। उन्होंने मुझे अनुसरण करने के लिए एक अच्छा उदाहरण दिया। ऐसा करने में मेरी मदद करें. मुझे अपनी इच्छाओं को समझने में मार्गदर्शन करें जो दिल के मुद्दों को ध्यान में रखती है और दिखावे के बारे में भटकती नहीं है। मुझमें शुद्ध हृदय की सत्यनिष्ठा का विकास करो।